होली
एक आध्यात्मिक पर्व

कल्प

में एक ही बार लेते हैं शिव अवतार और मनाते हैं कहानी प्रेम की होली। मानव जीवन को हर्ष और उल्लास से भरने के लिए होली का पर्व समीप आ गया तो -..... तुमक-तुमक कर नाचे गाये मस्तानों की टोली।

रंग - रंगोली होली आयी, रंग-रंगोली होली।।

करोड़ों लोग इसमें मौज मस्ती हुड़दंग करेंगे और दूसरे इसके विकृत रूप को देख कर इससे नफरत करेंगे। परन्तु होली को उसके अध्यात्मिक रहस्यों के साथ जानने के बाद ज्ञानी आत्मा के मुख से निकलेगा।

"भूल जा बेकार है तकरार की बातें, दिल से नफरत की गांठ खोल कर तो देख। तोड़ना सहज हैं तू जोड़ कर तो देख"

मनाने का समय - परमात्मा शिव का अवतरण दिवस शिवरत्रि ही हमारे लिये रंगों की बहार लेकर आता है। सत-चित आनन्द रूप परमात्मा स्थायी अविनाशी और सुख देने वाला आत्मिक प्रेम का रंग लगा कर आत्मा को अपना बनाते हैं। अर्थात मनुष्यों पर चढ़ा हुआ विकारों का रंग उतार कर ज्ञान के रंग में सराबोर कर उन्हें पूर्णिमा के चांद की भांति उज्जवल बनाते हैं।

होलिका दहन - होली मनाने की समस्त प्रकिया लाक्षणिक है। देशी वर्ष फाल्गुन मास की पूर्णिमा को समाप्त होता है। इस दिन रात्रि को होली जलाने का अर्थ है पूरे वर्ष में किये बुरे संकल्प व कर्मों को योगाग्नि से दग्ध कर दिया जाय।

प्राचीन काल में वेद के रक्षोहमं बलगहम् आदि राक्षस विनाशक मंत्रों के साथ होलिका दहन किया जाता था। यह हमें याद दिलाता है कि पापी अपने ही किये पाप के ताप से जल मरता है हो +ली = होली अर्थात Pastis Past इसी प्रकार अंग्रेजी में होलीं का अर्थ है पवित्र, पवित्रता के सागर परमात्मा के सम्पर्क में आने से अत्मा शुद्ध बन जाती है।

होली के रंग - यहां प्रतीकात्मकता में कहा जा सकता है रंग इतने प्रभावशाली है इनके सम्पर्क में आने वाला इनसे अछूता नहीं रह पाता। यहां प्रधानता है संग के रंग की। संसार में दो ही रंग है एक है माया का रंग और दूसरा ईश्वर का संग। परन्तु गहरे रंग पर हल्का रंग कभी नहीं चढ़ता। अभी भी समय है ज्ञान के रंग में सरावोर होकर अत्मा की कालिख को धोने का।

जैसे होली खेलने के लिये पिचकारी में रंग भर कर बौछार की जाती है तो तेज धार से वह वस्तु अपने वास्तविक रूप में आ जाती है उस पर से धूल हट जाती है वैसे ही ज्ञान स्वरूप परमात्मा ने जब पिचकारी से बौछार की तो आत्माओं पर चढ़ी विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) की परत उतरने लगी। उसका रूप निखरने लगा। नि:संदेह होली पर हमारा तन गुलाल अबीर और रंगों से रंगा जायेगा तो ईश्वरीय संग में रहकर आत्मा को भी रंगना है।

भारत के कई नगरों में ऐसा स्वांग होता है कि देवताओं का स्वरूप बनाकर झांकियां भी निकालते हें यह प्रतीक है हमारे श्रेष्ठ उज्वल रूप का जो हमने सतसंग के रंग से प्राप्त किया है।

सार्थक होली - होली सार्थक तभी होगी जब जाति-भेद, धम–भेद, ईर्ष्या, द्वेष को भुलाकर हम प्रेम से एक दूसरे को गले लगा लें ताकि कोई यह न कहें – हमें एक घर बनाना था मगर ये क्या बना बैठे, कहीं मंदिर बना बैठे कहीं मस्जिद बना बैठे, हमसे तो अच्छे परिदों की जाती है कभी मंदिर में जा बैठे कभी मस्ज़िद में जा बैठे।

अन्त में हम ब्रह्माकुमारी भाई बहने आपसे यहीं आशा रखते हैं कि आप सब होली को उसके सही रूप में मनायेंगे। होली की अनेकों शुभकामनायें स्वीकार करें। ईश्वरीय सेवा में।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com